3932

ओ३म्

खंडन मंडन ग्रन्थमाला--सं०--२८

सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़ का उत्तर-

देवराज शोध पुस्त...
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)
क्रम सं0......

लेखक-

'खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला' के यशस्वी प्रणेता

आचार्य डाक्टर श्रीराम आर्य

कासगंज

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक .. 803 (2)
दयानन्द महिला महा...

प्रकाशक —

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

प्रथमवार } दयानन्दाब्द १४२ सृष्टि सम्बत् १९७२९४९०६७ सन् १९६७ { मूल्य ४० न०पै

3132

ओ३म

एक व्यक्ति ने सत्यार्थ प्रकाश को छोछालेदड़ नाम का एक ट्रैक्ट हमको लाकर दिया है। इस ट्रैक्ट के टाइटिल पेज पर प्रथम पंक्ति में लिखा है। "ब्रह्माण्ड भर के दयानन्दियों से कुछ प्रश्न (पहिली किश्त)"। इस ट्रैक्ट में कुल ३८ प्रश्न किये हैं। यद्यपि प्रश्न ब्रह्माण्ड भर के दयानन्दियों से हैं। परन्तु उत्तर प्रश्न कर्ता ने हमसे मांगा है। प्रश्नकर्ता हैं मि० प्रेमा चार्य शास्त्री जो अपने को 'शास्त्रार्थ पञ्चानन लिखते हैं। यह नौजवान दिल्ली की प्रसिद्ध गाली गलौज बकने वाली पौराणिक पंडित मण्डली माधवाचार्य प्रेमाचार्य बीराचार्य एण्ड कम्पनी के सदस्य हैं व मि० माधवाचार्य के कुल कलंकी पुत्र हैं। इनके सारे ही प्रश्न असभ्यता पूर्ण तथा सार हीन हैं। क्योंकि इस प्रकार के क्षुद्र ट्रैक्टों से जनता में हमारे तथा आर्य समाज के प्रति भ्रम फैल सकता है। अतः विपक्षी के योग्य भाषा में 'शठे-प्रति शाठ्यं समाचरेत' की नीति के अनुसार हम उनका गर्व मर्दन करते हुये उनके प्रश्नों की इस किस्त को मय ब्याज के उन को चुका रहे हैं। आशा है उनका तथा उनके पक्ष वालों का उचित समाधान हो जावेगा और वह सभ्यता से प्रश्न करना भी सीख लेंगे।

यहाँ हम थोड़ा सा प्रकाश विपक्षी प्रेमा चार्य की असलियत पर भी डाल दें तो अनुचित नहीं होगा क्योंकि ये पिता पुत्र हमको व ऋषि दयानन्द जी महाराज को गालियाँ बहुत दिया करते हैं। विपक्षी अपने को 'पञ्चानन' लिखते हैं। कोष में पञ्चानन का अर्थ है 'महादेव जी'। अर्थात पार्वती के पति विपक्षी अपने को बताते हैं अथवा बनाना चाहते हैं। विपक्षी के यहाँ से प्रकाशित शास्त्रार्थ महारथी अंक में खण्ड २ पृ० १६ पंक्ति

१४ में लिखा है की 'पार्वती' विपक्षी की मां थी अर्थात विपक्षी प्रेमाचार्य अपनी मां का पति अपने को बताते हैं। यह कोई नई बात नहीं है क्योंकि उनके पिता श्री माधव जी भी तो नाम से अपनी मां=माता के धव=खसम हैं। बाप का आदर्श बेटे ने ज्यों का त्यों चरितार्थ किया है।

दूसरी बात यह भी सत्य है कि पञ्चानन का बाप दशानन और दशानन का बेटा पचानन होता है दशानन=रावण का बेटा पचानन (मेघनाथ) ये दोनों त्रेता युग के अन्त में महादुष्ट राक्षस थे। तब भी उन लोगों का बध आर्य श्रीराम के हाथों से हुआ था और अब कलियुग में भी वे दोनों पुनः इन बाप बेटोंके रुप में पैदा हो चुके है। इसमें पुराण की भी साक्षी है—

पूर्वयो राक्षसा राजन् तेकलौ ब्राह्मणाः स्मृताः। देवी भाग० ६/११/४२ अर्थात– हे राजन ! पूर्व काल के राक्षस ही कलिकाल में ब्राह्मण बन कर पैदा हो गये हैं।

इस पुराण वचन के अनुसार रावण और उसका पुत्र मेघनाथ आज के युग में भी दशानन और पंचानन (माधवाचार्य और प्रेमाचार्य) बन कर पैदा हो गये हैं। अब पुनः इस युग में इन दोनों का शास्त्रार्थ-समर में हमें बध करना ही होगा। ये ऋषि मुनियों के द्रोही, ब्राह्मण कुल कलंक, देश, सभ्यता तथा सत्य अर्थ प्रकाशक सत्यार्थ प्रकाश, के शत्रु अविद्या अन्धकार के प्रसारक, मूर्तिपूजा आदि पाखण्डों के पोषक एक सौ ग्यारह नम्बरी तिलक छापे लगा कर जनता को धोखा देने वाले रावण तथा कंस के बंशज हैं। अब हमें इन धर्म व देश द्रोहियों से निबटना ही पड़ेगा। ऐसे धर्म द्रोहियों के विनाश के लिये ही श्रीराम आर्य को इस युग में पुनः भारत में आकर जन्म लेना पड़ा है।

विपक्षी ब्रह्माण्ड भर के दयानन्दियों से प्रश्न करता है

इसका अर्थ यह कि वह महर्षि दयानन्द जी महाराज के अपार व्यक्तित्व के आगे सर झुकाता है। वह इस सत्य को जानता है कि दयानन्द के भक्त इस पृथ्वी पर ही नहीं हैं वरन् जितने भी आकाश में लोक लोकान्तर तारागणग्रह उपग्रह आदि दीखते हैं व अदृश्य हैं उन सभी में दयानन्दी आर्य समाजी बसते हैं। ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व आ जाता है। विपक्षी उन सभी से प्रश्न कर रहा है। उसे यह देख कर बड़ा दुःख होता है कि उसका सड़ातन धर्म इस छोटी सी पृथ्वी के चन्द्र ज्ञान हीन मनुष्यों का पंथ रह गया है और उस पर भी अधिकांश लोग विश्वास नहीं करते हैं। आर्य समाज के प्रेमियो के लिये यह गौरव की बात है कि उनके प्रभाव व विस्तार को विपक्षी लोग भी अब 'ब्रह्माण्ड व्यापी नतमस्तक होकर मानने लगे हैं। साथ ही ब्रह्माण्ड भर के आर्य समाजियों की ओर से उत्तर देने के लिये विपक्षी हमको प्रतिनिधि मान कर हमसे ही अपने प्रश्नों का जबाब मांग रहा है। हम उसका (रावण मेघनाथ के रूप में) यथोचित पूर्ववत सत्कार करने को समुद्यत हैं। विपक्षी अपनी जाली किस्त का मय सूद के उत्तर अब चुकता स्वीकार करें।

यहाँ हम विपक्षी से पूछना चाहते हैं कि हमारे संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न तथा 'अवतार बाद पर ३१ प्रश्न' इस प्रकार ६२ प्रश्न तुम सहित सारे संसार के पौराणिकों की खोपड़ी पर गत ७, ८ बर्षों से सवार हैं जिनका उत्तर संसार का कोई भी सनातनी पंडित नहीं दे सका है। तो जब तक तुम हमारी दोनों किस्तों को न उतार लो, तुमको हम से सबाल करने का हक क्या है? हमरी दो दर्जन से भी अधिक पुस्तकें अब तक तुम्हारे मिथ्या सम्प्रदायों के खण्डन में छप चुकी है। तुम्हारी

मंडली से एक का भी जवाब आज तक नहीं बन सका है, यह संसार जानता है। तुम और तुम्हारे पिता जी तो हमारे पुराने कर्जदार हो। पहले हमारा कर्जा चुकाने की कोशिश करो। और यदि नहीं चुका सकते हो तो हमसे लिखित माफी माँग कर अपने को देवालिया घोषित करदो। वरना बाद मियाद के हम नालिश करके तुम्हारी सारी जायदाद कुर्क कराकर तुमको मण्डली सहित सरे बाजार नीलाम पर चढ़ाकर तुमसे अपनी किस्तों का जवाब तलब करेंगे॥

अगर तुम अपनी पैत्रिक बदतमीजी से पेश आओगे तो हम पुराणों के डन्डों से तुम्हारा दिमाग दुरुस्त कर देंगे जैसा कि सदैव सनातनियों का हम किया करते हैं। तुम लोग तो हम आर्यों के कदीमी कर्ज दार हो। तुम्हारी औकात क्या है जो बढ़ बढ़ कर बातें करते हो। इस बार तो हम तुम को नादान समझ कर क्षमा करते हैं और तुम्हारे जाली प्रश्नों का जवाब दिये देते हैं, पर आगे ऐसी गलती न करना।

कासगंज (उ० प्र०) **आचार्य डा० श्रीराम आर्य**

ता० १४।१२।६७

विपक्षी के प्रश्नों के उत्तर—

प्रश्न १-सत्यार्थ प्रकाश के आवरण पृष्ठ पर जो आर्यवत्सर छपा है वह कौन वेद मंत्र के अनुकूल है? जिन पुराणों को तुम नित्य कोसते हो उनमें जिसे ओंतत्सदद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे आदि पौराणिक प्रमाण से ही आर्यवत्सर निकालना तुम्हारे लिये डूब मरने की बात है?

उत्तर-इस पृथ्वी की कुल आयु वेद के 'शतं ते युतं हायनान द्वे युगे त्रीणि चत्वरि कृण्मः। इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यताम हृणीयमानः। ।अथर्व ८/२/२१।। मन्त्रानुसार कुल चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की है। इसमें सृष्टि के प्रारम्भ काल से जितने वर्ष बीतते जाते हैं, वही आर्यों का सृष्टि सम्वत् प्रारम्भ से १/१ वर्ष आगे बढ़ता जाता है इस प्रकार अब तक सृष्टि की आयु की १९७२९४९०६७वीं वर्ष चल रही है। यही वैदिक सम्वत् है। इसकी गणना सरलता से सब कोई याद रख सके इसलिये गणित के ज्योतिषकारों ने सम्वत, चतुर्युगी तथा युगों का विभाग कर के एक सूत्र रूप में 'ओंतत्सदद्य' आदि का छोटा सा रूप में बना दिया है जिसे सब पौराणिक पंडित लोग ग्राहकों को ठगते समय सकल्प के रूप में भी बोला करते हैं। यह कोई पौराणिक प्रकार नहीं है जिस पर आप जैसे ठगों का ठेका हो। यदि इसी को किसी पुराणकार ने भी अपने पुराण में लिख लिया हो तो यह पुराण की सम्पति नहीं बन सकता है। यह तो इतना प्राचीन है जितनी कि सृष्टि की आयु है। यथा समय इसमें परिवर्तन किया जाता रहा है और आगे होता रहेगा। ताकि यह समयानुकूल बना रहे। इसका बनाने वाला किसी भी पौराणिक को आप त्रिकाल में भी सिद्ध नहीं कर सकते हैं। आपका प्रश्न व्यर्थ है।

प्रश्न २-स०प्र० पृथम पृष्ठ पर जो ओ३म (ओ+३ का अंक और म) लिखा है यह कौन वेद के अनुकूल है। उपनिषद तो 'ॐ'कार बिन्दु सयुक्तम्' प्रमाणानुसार बिन्दु संयुक्त ॐ कार का ध्यान करना बताते हैं?

उत्तर-ॐ यह ओ३म् का पौराणिक प्रतीक है। ऊ अक्षर की पूँछ को ऊपर को मोड़ कर नकार की बिन्दी रख देने से जो उच्चारण बनेगा वह ऊँ बनेगा, न कि ओम् बनेगा। ओम् शब्द अ+उ+म् इन तीन अक्षरों से ही बनता है। अ+उ मिल कर ओ बनता है और अन्त में म मिलाने पर 'ओम्' बनता है। किन्तु वेद में अष्टाध्यायी के नियमानुसार प्लुत होकर ओ३म् शब्द सिद्ध होता है। तो जो वेद में शुद्ध है वह सर्वत्र ही शुद्ध होगा। इसीलिए जब भी उच्चारण किया जाता है तो ओ को दीर्घ स्वर से बोलने पर अंत में म् जोड़ने से ओ३म ही बोला जाता है। जल्दी से बोलना हो तो ओम् कह देते हैं। अतः ओ३म् शब्द इसी रूप में बोला जाता है। सर्वत्र सर्वथा शुद्ध है और वैसा ही लिखा जाना चाहिये। सत्यार्थ प्रकाश, तो सत्य का प्रकाशक ग्रन्थ है। उसमे यह ओ३म् का स्वरूप ठीक है। तुम्हारे परम मान्य यजुर्वेद के महीधर उव्वट भाष्य वाले सस्करण में भी अ० ४० मंत्र १५ व १७ में 'ओ३म' इसी रूप में छपता है देख लो

तुमको जब कुछ आता जाता नहीं है तब प्रश्न करने का उन्माद क्यों सवार हो गया है। ओ३म् जिसका वाचो है उस परमेश्वर का ध्यान किया जाता है न कि ॐ ओम् या ओ३म अक्षरों का शब्दों की आकृतियों का। शब्द तो किसी भी भाषा में किसी भी लिपि में लिखे जा सकते हैं। उनकी शक्लों का ध्यान नहीं होता है बल्कि नाम वाली सत्ता का ध्यान होता है।

इसी प्रकार ओ३म वाली ब्रह्म की सत्ता का ध्यान होता है। तुमको तो इतनी भी जानकारी नहीं हैं। तुम्हें शास्त्री किसने बना दिया, या डिग्री कहीं से दो चार रुपये में मोल तो नहीं ख़रीद ली है।

'ओंकार बिन्दु संयुक्त' का आपका प्रमाण पौराणिक होने से हमको मान्य नहीं है आपको पूरा श्लोक तथा पता भी उसका साथ में लिखना चाहिये था। पूंछ व बिन्दी वाले ॐ को आप सात जन्म में भी वैदिक साबित नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न ३-स०प्र० की भूमिका पृ० १ पर लिखा हैं कि "द्वितीयावृति में कहीं कहीं शब्द, वाक्य रचना का भेद हुआ है, परन्तु अर्थ भेद नहीं किया गया है।" यह स्वामी का महा झूठ है क्योंकि प्रथमावृति में बन्ध्या गाय का बध, मांस, हवन और मृतक श्राद्ध आदि अनेक विषय थे जो द्वितीयावृति में निकाल दिये गये हैं। तथा प्रथमावृति में ११ समुल्लास ··· ···थे और द्वितोयावृति में १४ समुल्लास··· ···आदि हैं। क्या इतने पर भी अर्थ का भेद नहीं हुआ ?

उत्तर-पौराणिक मत में विष्णु पुराण अं०३ अ० १६ में मृतक श्राद्ध में गाय को मार कर हवन करना और पौराणिक पंडितों को खिलाना आदि का विधान आज भी दिया है। स्वामी जी के नौकर भीमसैन आदि प्रच्छन्न पौराणिक लोगों ने जिन पर सत्यार्थ प्रकाश का प्रूफ शोधन आदि का कार्य भार था उन्होंने प्रेस कापी में अपनी ओर से हाशिये पर मृतक श्राद्ध आदि की मूर्खता पूर्ण पौराणिक मान्य बातें घुसेड़ कर छपा दी थीं। स्वामी जी प्रचार में रहते थे। जब उनको पता लगा तो उन्होंने प्रथम संस्करण को अमान्य घोषित करके संशोधित द्वितीय संस्करण छपने दिया था। उन प्रक्षिप्त अंशों के अतरिक्त

शेष सत्यार्थ प्रकाश के दोनों संस्करणों में पद या वाक्य रचना भेद तो है पर तथ्यों में कोई भेद नहीं हैं । प्रथम संस्करण छपने तक ११ समुल्लास ही तैयार हो पाये थे । किन्तु द्वितीय छपने के समय जैनियों पर १२ वाँ, ईसाइयों पर १३ वाँ तथा मुसलमानों पर १४ वां ये तीन समुल्लास और तैयार हो गये थे । अतः उसमें छपा दिये गये थे ।

इस सबमें गलत क्या है, यह विपक्षी नहीं बता सका है । आखिर जो कुछ भी लिखा है वह सत्य तो है ही, और यह तुम भी मानते हो । अथवा ईसाई व इस्लाम का खण्डन देख कर दिल में तुम्हारे दर्द होता हो तो स्पष्ट कारण सहित बताओ कि क्यों होता है । रहा गौ मांस की बात वह तो कात्यायन स्मृति तथा विष्णु आदि पुराणों के अनुसार आप लोगों का परम भोजन है ही । उस पर आप का ऐतराज करने का हक ही नहीं है । हम आर्य लोग आप से इसी लिए घृणा करते हैं कि आप लोग पौराणिक मतानुसार गौ मांस भक्षण को अवैध नहीं मानते हैं ।

स० प्र० की दोनों आवृत्तियों में जब समुल्लासों का अन्तर हो गया तो शब्द - मात्रा वाक्यों का अन्तर स्वाभाविक ही था । पर इसमें अवैदिक क्या हुआ यह आप नहीं बता सके हैं, अतः प्रश्न गलत रहा है ।

प्रश्न ४-स०प्र भू० पृ०४ में स्वामी ने श्री मद्भगवद्गीता का 'यत्त-दग्रे विषमिव' आदि प्रमाण उद्घृत करके अपने पक्ष की पुष्टि की है, परन्तु कासगंजी गीता का खण्डन करता है-दोनों में कौन सच्चा है ? दोनों झूठे है ।

उत्तर-गीताकार ने बड़ी चतुराई से उपनिषद-नीति ग्रन्थ,महाभारत आदि के अनेक उत्तम वाक्यों का संग्रह करके उनसे पाठकों को प्रभावित करके पीछे से हर स्थल पर कृष्ण को साक्षात परमात्मा

बनाने का जाल रचा है। तो यदि गीता के स्वयं उधार लिये वाक्यों में से किसी नीति के वाक्य को स्वामी जी ने उद्घृत कर दिया तब उससे सारी गीता कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं बन जाती है। यदि कुरान की कोई अच्छी बात उद्घृत करदी जावे तो सारा कुरान सनातनियों की पूज्य पुस्तक व सत्य ग्रन्थ बन जावेगा ? क्या आप उसे वैसा मान लेंगे ?

हमने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'गीता विवेचन' में गीता के सिद्धान्तों का सारा पोलखाता खोल कर रख दिया है, जिसे पढ़ कर अब सनातनी विद्वान भी गीता को मान्य पुस्तक नहीं मानने लगे हैं। तुम बिचारे किस गिनती में हो, "पिद्दी नपिद्दी का शोरुआ" हमारी 'गीता विवेचन' पुस्तक का उत्तर भारत का कोई भी पौराणिक दे ही नहीं सकता है। वह सर्वथा सत्य पुस्तक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने कभी गीता को मान्यता नहीं दी थी। अतः उनका और हमारा दोनों का पक्ष सत्य है कि गीता मिथ्या पुस्तक है। न अर्जुन को कभी विषाद हुआ था और न श्रीकृष्ण जी ने किसी गीता का उपदेश उसे दिया था। यह गीता तो किसी वैष्णव कृष्ण पन्थी ने बाद को गढ़ कर महाभारत में घुसेड़ दी है, अतः जाली ग्रन्थ है।

प्रश्न ५-स० प्र० भूमिका पृ०४ पर लिखा है "मै दयानन्द आर्यावर्त में पैदा हुआ हूं" सफेद झूठ। आर्यावर्त तो हिमाचल और बिन्ध्याचल पर्वतों की मध्य भूमिका नाम मन्वादि स्मृतियों से सिद्ध है। स्वामी जी पैदा हुए गुजरात में हरिभजन कापड़ी को करी कराई औरत के पेट से।

उत्तर-विपक्षी अव्वल नम्बर के धूर्त हैं। उसे महर्षि के पावन व्यक्तित्व को बलात् कलंकित करने की धुन सवार है। उसे आर्यावर्त की सीमा का भी परिज्ञान नहीं है। इसने बाल्मीकि रामायण

तक भी नहीं पढ़ी है जिसमें विन्ध्याचल की स्थिति दक्षिणी भारत के दोनों ओर के समुद्र तटीय पर्वत माला तक मानी है न कि उत्तर प्रदेश के विन्ध्याचल की सीमा को। देखो प्रमाण:—

कन्दरादभिनिष्क्रम्य स विन्ध्यस्य महागिरे ।।वा०रा०किष्किन्धा कां० सर्ग ५६/३।।

दक्षिणस्योदधेः तीरे विन्ध्योऽयमिति निश्चितः ।।सर्ग ६०/७।।

जटायु का भाई सम्पाति विन्ध्य पर्वत की कन्दरा में से निकल हनुमान से बोला। दक्षिण समुद्र के किनारे का यह निश्चित रूप से विन्ध्य पर्वत है।

इसका अर्थ हुआ कि हिमालय से लेकर भारत के दूरस्थ दक्षिणी प्रांत तक का सारा प्रदेश (सम्पूर्ण भारत वर्ष) ही आर्यावर्त है। अतः ऋषि का यह लिखना कि मैं आर्यावर्त में पैदा हुआ हूँ, सर्वथा सत्य है।

महर्षि के पूज्य पिताजी का नाम कर्षनजी तिवारी था तथा पितामह का नाम लालजी तिवारी था। वे औदीच्य ब्राह्मण थे, यह इतिहास से प्रमाणित हो चुका है। तुम तो सभी को अपना जैसा ही समझते हो। तुम्हारे पिताजी माधवाचार्यजी ने परवतिया कर ली थी और उससे नियोग करवा कर तुम जैसी कपूती कुलकलंकी औलादें पैदा करा ली हैं। अब तुम स्वयं किसी कञ्जर से गड़बड़ी पैदायशी होने से संसार को अपने ही समान समझते हो, यह तुम्हारी सरासर मूर्खता है। यदि तुम किसी उच्च वर्ण के पिता के वीर्य से या कुलीन माता की कोख से पैदा हुए होते तो महर्षि दयानन्द के परम पावन व्यक्तित्व पर कीचड़ उछालने का साहस नहीं करते और न हमको गालियां देते। मिस्टर! यह तो नुत्फे का दोष है, तुम बिचारे क्या करो। मजबूर हो पैत्रिक स्वभाव से। एक बात बताओ। तुम्हारे

पिताजी माधव जी ने कई घरोने किये थे, तो तुम उनकी कौन सी नम्बर की बीबी से पैदा हुये थे ?

प्रश्न ६-आर्यसमाज जोधपुर द्वारा प्रकाशित 'मांस भोजन विचार' नामक पुस्तक में वेद मन्त्रो से पकाना और खाना लिखा है। वह सब दयानन्दियों का मान्य ग्रन्थ है न ?

उत्तर-आर्यसमाज मांस भोजन को पौराणिकों और राक्षसों का मानता है, वैदिक नही , यह संसार जानता है। यदि किसी पौराणिक ने किसी आर्यसमाज के नाम से आर्यसमाज को बदनाम कराने के लिये कोई किताब ऐसी छपा भी दी हो तो वह वेद व ऋषि के आदेश के विरुद्ध होने से हमको अमान्य है। ऋषि ने गोकरुणा निधि' आदि पुस्तकों में मांसाहार का निषेध किया है। सत्यार्थ प्रकाश में मांस भोजन का निषेध स्पष्ट है। परन्तु आप बतावें कि शराब पीना, रज वीर्य चाटना, पुरुष की उपस्थेन्द्रिय चाटना, अजामेध, गोमेध (कात्यायन स्मृति) लम्बे कान वाला बकरा, गेंडा, मछली. क लगाय, हिरन, कछुआ, आदि खाना (मनुस्मृति) यह आपका सनातन धर्म किस प्रमाण से मानता है। रज वीर्य पीना आपके मान्य शास्त्र कुलार्णव तंत्र में लिखा है। असवर्णी पत्नी को वीर्य पिलाना भागवत पुराण में लिखा है। श्रीकृष्ण जी को शराबी तुम्हारे गन्दे भविष्य पुराण में बताया है। ये सारे पापाचार अपने मत में किस प्रमाण से तुम लोग मानते व अमल में लाते हैं। तुमको हम पर झूठे आक्षेप करने में शर्म भी क्यों नही आती है ?

प्रश्न ७-स० प्र० पृ० १ में लिखा है 'सच्चिदा नंदेश्वराय नमो नमः' यह मंगलाचरण किसी भी प्राचीन वेद शास्त्र ग्रंथ में नही लिखा है, अतः यह न केवल अवैदिक अपितु अर्वाचीन भी है।

उत्तर-यदि आपको 'सच्चिदा नंदेश्वराय नमो नमः' वाक्य किसी

भी वेद शास्त्र में नहीं मिला तो इसमें अवैदिकता क्या आपको नजर आई, यह नहीं बताया गया। किसी वेद मंत्र से इसका विरोध दिखाना था यदि अवैदिक सिद्ध करना था। वह आप नहीं कर सके। इसमें गलत क्या है यह भी नहीं बता सके हैं। परमात्मा सत्+चित्+आनंद स्वरूप तो है ही, उसे तो आप भी मानते हैं और यह उसका नाम भी है। तब उसके गुण कर्म स्वभावानुरूप किसी भी नाम से उसे नमस्कार किया जा सकता है। यह अर्वाचीन हो या प्राचीन, पर अवैदिक नहीं है अतः उचित है। वेद के विरुद्ध प्रमाणित न होने से यह वेदानुकूल स्वयं सिद्ध हो जाता है। आपको तो प्रश्न करने की भी तमीज नहीं है। व्यर्थ ही अपने को आप शास्त्रार्थ दशानन बताकर कलंकित करते हो और अपने सुयोग्य पिता श्री माधवाचार्यजी का नाम बदनाम करते हो। तुम तो उनकी कपूती औलाद निकले। इससे तो तुम्हारी जगह उनके कोई प्रेमवती नाम की कन्या पैदा होती तो किसी आर्यसमाजी नौजवान का घर तो भी बसाती।

एक बात बताओ, तुम जो पारवती के मैल के पुतले महा अछूत गणेश के सर पर हाथीकी कलम लगाकर ऐक बिचित्र पहाड़ी जन्तु को 'श्री गणेशाय नमः' लिखते हो वह किस वेद शास्त्र उपनिषद व्याकरण आदि के अनुकुल है और कैसे ?

प्रश्न ८-स०प्र० में विभागों का नाम समुल्लास लिखा है…… यह निरर्थक है।……समुल्लास शब्द विलास का समकक्ष है जो स्त्रियों के हाव भाव नखरों का वाचक है……।

उत्तर-विपक्षी की मूर्खता उसके प्रश्न से प्रगट है। उल्लास शब्द का अर्थ कोष में हर्ष, आनन्द, अध्याय परीच्छेद आदि दिये हैं। सम् का अर्थ है अच्छी तरह से, सुन्दरता से, शुद्ध-बराबर आदि। इस प्रकार समुल्लास का अर्थ हुआ उत्तम सुन्दर अध्याय।

विपक्षी को हिन्दी भी तो नहीं आती है और बना फिरता है शास्त्री। इस बुद्धि के हिमालय को सर्वत्र स्वप्न में भी दिल्ली के काठ बाजार की रन्डियों के हाव भाव बिलास के ख्वाब आया करते हैं। जिनके चक्कर में इसने अपनी सारी जवानी बर्बाद की है

प्रश्न ९—सं० प्र० में लिखा है कि जो आदि मध्य और अन्त में मंगल करेगा तो उस ग्रन्थ के बीच में जो कुछ लेख होगा वह अमंगल ही रहेगा। स्वामी जी ने स्वयं आदि और अन्त में ओं शन्नो मित्रः आदि मंगला चरण किया है इससे स० प्र० के बीच में जो कुछ लिखा है सो अमंगल ही हुआ न?

उत्तर-मंगल आचरण का अर्थ है सत्याचरण करना। स्वामी जी का लेख है 'ग्रन्थ के प्रारम्भ से लेकर समाप्ति पर्यन्त सत्याचार करना ही मंगल आचरण है नकि कहीं मंगल और कहीं अमंगल लिखना'। स्वामीजी के सम्पूर्ण ग्रन्थ में सत्य का ही आचरण है। पौराणिक ग्रन्थों में आदि मध्य तथा अन्त में कहीं २ मंगल आचरण दीख पड़ता है जो कि जनता को धोखा देने को होता है। शेष सारे ग्रन्थ में पाखण्ड भरा होता हैं। अतः स्वामी जी का लेख सत्य है। शन्नो मित्रः' मंत्र से ईश्वर प्रार्थना की गई है नकि ग्रन्थ के विषय में सत्याचरण से उसका कोई सम्बन्ध है। क्या विपक्षी परमात्मा की प्रार्थना को मिथ्याचरण मानता हैं।

प्रश्न १०—स०प्र० पृ० १ का 'शन्नो मित्रः' आदि का पूरा मंगलाचरण चारों संहिताओं में दिखाओ। नहीं तो केवल चार संहिताओं के वेद होने का दुराग्रह छोड़ो ··· ···।

उत्तर- शन्नोमित्रः मंत्र तैत्तिरीयोपनिषिद शिक्षावल्ली प्रथम अनुवाक का प्रथम मत्र है। उपनिषत्कार ऋषि परमेश्वर की प्रार्थना उक्त मंत्र द्वारा की हैं। महर्षिदयानन्द जी महाराज को एकादश उपनिषदें मान्य थीं। उक्त उपनिषद भी उनमें से एक

है। अंतः ऋषिवर ने उपनिषत्कार ऋषि की प्रार्थना के सुन्दर मंत्र के द्वारा ही परमेश्वर की प्रार्थना की है। उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश में उक्त मंत्र को, वेद मंत्र कहीं नहीं बताया है। तब विपक्षी का हम से उसे वेद संहिताओं में दिखाने को कहना कोई मानी नहीं रखता है। प्रश्न करने से पहले उसे प्रश्न करने का तमीज होनी चाहिये।

प्रश्नः—११ उपर्युक्त मंत्र में त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि 'वाक्य विद्यमान है जिसका अर्थ है " तू ही प्रत्यक्ष ब्रह्म है "। जबकि ब्रह्म प्रत्यक्ष = नेत्रों का विषय है फिर तुम उसे केवल निराकार क्यों कहते हो ?

उत्तर —कार्यजगत को देखकर उसके ज्ञानवान सर्वव्यापक कर्ता परमेश्वर का अनुमानपूर्वक प्रत्यक्ष प्रत्येक उस व्यक्ति को होजाता है जिसके ज्ञाननेत्र खुल जाते हैं। पर जिन पौराणिकों के भीतर व बाहर के दोनों नेत्र फूटे होते हैं उनको कुछ भी समझ में नहीं आता है। ध्यानावस्थित व्यक्ति परमेश्वर को अपने अन्दर अपने ज्ञान नेत्र से आत्मा में अनुभव करके कहता है कि परमेश्वर ! तुम ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। इसमें कोई आक्षेप परमेश्वर के निराकारत्व पर नहीं बनता है। प्रश्न कर्ता अज्ञानी है, उसका प्रश्न निराधार है।

प्रश्न १३—सं० पं० पृ० ३ पर लिखा है कि सब्रह्मा सविष्णु सरुद्र अर्थात् वही परमात्मा ब्रह्मा, विष्णु, और रुद्र है। जब तुम त्रिदेवों की निन्दा करते हो तब ईश्वर की ही निन्दा करते हो न ?

उत्तर सत्यार्थप्रकाश में एक ही सर्वव्यापक ब्रह्म के सौ नाम गिनाये हैं। ये नाम भी उसी एक परमेश्वर के हैं। परन्तु पुराणों में लम्बी दाढ़ी वाला निज पुत्रीगामी चार मुंह वाला ब्रह्मा था जिसकी खोपड़ी पर गधे का सर भी था। चार हाथों वाला, सर्प

पर सोने वाला, लक्ष्मी देवी नाम की स्त्री का पति सती तुलसी व वृन्दा का छल से व्यभिचार करके सतीत्व नष्ट करने वाला (शिवपुराण), तथापि पर नारीणाँ लम्पटो नित्यमेव हि' (धर्म संहित१०।१०) के अनुसार पर नारियों का लम्पट, अवतार लेकर 'चोर जार शिखामणि' (गोपाल सहस्त्र नाम ११७) के अनुसार चोर और व्यभिचारियों में शिरोमणि ऐसा व्यक्ति विष्णु था सर पर जटा जूट धारण करने वाला, पारवती तथा सती का पति, त्रिशूल धारी, महानन्दा वेश्या से वेश्यागमन (शिवपुराण) तथा दैत्य पुत्रआदि से अप्राकृतिक व्यभिचार करने वाला (मत्स्यपुराण), कैलाश पर्वत वासी शिवजी था। ये तीनों व्यक्ति ब्रह्मा, विष्णु व महादेव पुराणो के अनुसार बड़े अत्याचारी थे। इन तीनों ने मिल कर अत्रिऋषि की सती साध्वी पत्नी अनसूया को जबर्दस्ती पकड़ कर बलात व्यभिचार की भी चेष्टा की थी (भविष्य पुराण)। पुराणों में ये तीनों देवता परमात्मा से भिन्न बताये गये हैं। इन के चरित्रों की अश्लील कथाओं से पुराण भरे पड़े हैं। हम उन पुराणोक्त कथाओं को जनता को दिखाते हैं तो क्या पाप करते हैं। तुम इन कूड़ापन्थी पुराणों को समुद्र में जल प्रवह क्यों नहीं कर देते हो, हमारा तुम्हारा झगड़ा ही खतम हो जावे। हमने ईश्वर की निन्दा कभी नहीं की है। तुम्हारे फर्जी देवताओं की वास्तविकता का पर्दा फोश किया है।

पुराणकार तुम्हारे सवाल का जवाब देता हुआ तुम्हारे कान खींचता है और बताता है।—

विष्णुं ब्रह्मादि रूपाणामैक्यं जानन्ति ये मानवा।
तेयान्ति नरकं घोरं पुनरवृत्ति बर्जितम्॥ (गरुड़पु०)

भावार्थ-विष्णु, ब्रम्हा, शिव को स्वरूप से जो पौराणिक लोग एक बताते व जानते हैं, उन दुष्टो को घोर नरक मिलता है और फिर

कभी उनका पुनर्जन्म भी नही होता है ।

तुम पौराणिक होकर त्रिदेवों को एक कैसे मान सकते हो ? सोचो और समझो ।

प्रश्न १३–स० प्र० पृ० ४ में लिखा है कि – परमात्मा का नाम ओउम् ' है अन्य सब गौण नाम है । गौण शब्द का अर्थ है, गुण सम्बन्धी । स्वामी जो इसी सन्दर्भ में ओउम् का अर्थ अवनीति ओउम्' रक्षा करने से ओउम् ऐसा लिखा है । सो रक्षण भी तो एक गुण है अतः ओउम् भी गौण नाम सिद्ध हुआ फिर इसे निज नाम कैसे कहते हो ?

उत्तर–यजुर्वेद अ ४० मंत्र १७ में' औउम् खं ब्रह्म' अर्थात जो आकाश के समान व्यापक महान ब्रह्म परमेश्वर है उसका नाम ओउम्' है. ऐसा लिखा है । इससे परमेश्वर का मुख्य नाम ओउम् वेदानुकूल सिद्ध है । इसके अ+उ+म इन अक्षरों में परमेश्वर के जितने भी नाम हो सकते हैं वे सभी इसके अन्तर्गत आ जाते हैं। विपक्षी गौण शब्द का अर्थ भी नही जानता है। हमें उसकी कम अक्लो पर तरस आता है । श्रीधर भाषा कोष पृ० १४६ पर गौण शब्द का अर्थ दिया है ="(वि) अमुख्य, जो ठीक नहो । "इसका तात्पर्य यह हुआ कि परमेश्वर का मुख्य नाम ओउम् है और शेष सारे नाम जो इसके गुण तथा कर्मों की अपेक्षा से निश्चित किये जा सकते हैं वे सभी गौण अर्थात अमुख्य (जो मुख्य न हों) हैं । विपक्षी को शब्दार्थ का ज्ञान कोष से कर लेना चाहिये था यदि उसे हिन्दी भाषा भी आती होती तो ऐसे ऊट पटांग प्रश्न न करने पड़ते । सत्यार्थ प्रकाश का लेख सत्य है । यजु २/१३ में भी परमेश्वर का मुख्य नाम 'औउम् प्रतिष्ठ' कह कर औउम्' बताया है

प्रश्न १४ यहीं लिखा है कि-(परमात्मा) सब जगत कोबनाने से ब्रह्मा, है । पृष्ट ६ पर लिखा है वह परमात्मा उत्पत्ति आदि

व्यवहारों से पृथक है ... परस्पर विरुद्ध हैं।

उत्तर—सत्यार्थप्रकाश पढ़े लिखे लोगों के समझने की चीज है, बे पढ़े लिखे उसे नहीं समझ सकते हैं। स्वामी जी ने ठीक ही लिखा हैं कि जगत की रचना करने वाला होने से परमेश्वर को ब्रह्मा कहते हैं। वह परमेश्वर स्वयं कभी जन्म नहीं लेता है क्यों कि वह अनादि सत्ता हैं। अतः उसकी उत्पत्ति नहीं होती है। इसलिये लिखा है कि 'वह उत्पत्ति आदि व्यवहारों से पृथक है'। इस साधारण सी बात को भी न जो समझ सके तो ऐसे कुपढ़ अज्ञानी को कौन पढ़ालिखा तथा शास्त्री मानेगा ?

हां निज पुत्री गामी, सती अनसुइया से बलात्कार करने वाला (भविष्य पुराण) जिससे राक्षसों ने पुंम मैथुन किया हो। (भागवत पुराण) लम्बी दाढ़ी वाला, चार मुंह वाला, विष्णु की नाभि से जो पैदा हुआ हो, वह विष्णु का बेटा पौराणिक आपका फर्जी ब्रह्मा अवश्य पैदा होने व मरने वाला हैं सत्यार्थ प्रकाश का ब्रह्म पौराणिक ब्रह्मा से भिन्न है, यह बात आप सदैव याद रखा करें। आया ख्याले शरीफ में या नहीं ?

प्रश्न १५— स०प्र०पृ० ११ लिखा है 'परश्चासावात्मा च... परमात्मा'। पर और आत्मा शब्दों की सन्धि करने पर परात्मा बनेगा न कि परमात्मा ?

उत्तर—इस प्रश्न पर तुम अपनी शंका समाधान दो प्रकार से कर सकते हो। प्रथम तो यह आर्ष प्रयोग है। अतः सत्य है। यह तुम्हारी समझके बाहर की बात है। दूसरे-तुम यदि इसे प्रेस की अशुद्धि मानते हो जैसा कि तुमने स्वयं अपने गन्दे ट्रैक्ट शल्यो जेष्यति पाण्डवान' में पृ० ३८ पर पंक्ति ३ व ४ में स्वीकार किया है 'परन्तु सत्यार्थ प्रकाश के तीसवें संस्करण तक यह अशुद्धि ज्यों की त्यों छपती आरही हैं'। तो भी तुम को प्रश्न करने का अधिकार

नहीं था। प्रेस की गलतियां तो तुम्हारे यहाँ के घासलेटी साहित्य में हजारों भरी पड़ी होती हैं। तब क्या हम तुम्हारी किताबों में छपी अशुद्धियों को देख कर यह घोषित करदें कि तुम सब बिलकुल कुपढ़ हो, और तुम्हें हिन्दी लिखना भी सही नहीं आता है? प्रश्न सोच समझ कर किया करो तो ठीक होगा। इस प्रश्न से तो तुम्हारी नादानी ही प्रगट होती है, न कि पाण्डित्य।

प्र०१६—स०प्र०पृ० १४ में लिखा है कि परमात्मा का नाम नारायण है। सो ओ३म् के निज नाम होने में कोई प्रमाण नही है क्यों कि स्वीकारार्थक अव्यय भी ओ३म् है। वस्तुतः परमात्मा का निज नाम नारायण है जिसके निजत्व में पूर्व पदात्संज्ञायामग (अष्टा०) यह णत्व विधायक सूत्र विद्यमान है।

उत्तर—परमेश्वर का निज मुख्य नाम ओ३म्' यजुर्वेद ४०/१७ में 'ओ३म् खंब्रह्म'' तथा यजु: २/१३ में 'ओ३म् प्रतिष्ठ' योग दर्शन में 'तस्यवाचकः प्रणवः' यजु० ४०/१५ में ओ३म् क्रतोस्मरः इत्यादि अनेक प्रमाणों से सिद्ध है। नारायण शब्द भी परमेश्वर का वाचक सिद्ध किया जा सकता है जैसा कि सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है।

परन्तु पौराणिक साहित्य में परमात्मा का नहीं वरन चार हाथों वाले विष्णु का नाम नारायण बताया है क्यों कि वह क्षीर सागर में जल में निवास करता है। नार=जल, अयन=स्थान, अर्थात जल में रहने वाले कछुआ, मछली, केकड़े, मगरमच्छ आदि जीव जन्तु भी आप के अर्थ में पक्के नारायण बन जावेंगे। तुम्हारे अल्हड़ सम्प्रदायका परमेश्वर पर तो विश्वास है नहीं, मगरमच्छों को नारायण मान कर पूजते व मछली को खाते हो, तुम तो नारायण भक्षी हो, न कि नारायण के भक्त हो। परमेश्वर का मुख्य नाम ओ३म् ही है जो शास्त्र सम्मत है।

प्र० १७—स०प्र०पृ० १५ में लिखा है कि यः शनैश्चरति स

शनैश्चर: " परमेश्वर का नाम शनैश्चर है। चर धातु गमन और भक्षणार्थक है: तदनुसार धीरे धीरे चलने वाला या खाने वाला इसका अर्थ होगा। इससे सिद्ध है कि दयानन्दियों का कल्पित परमात्मा पंगु किंवा मुख रोगी है?

उत्तर—आपने उदाहरण अधूरा पेश किया है। स०प्र० का पूरा लेख निम्न प्रकार है—

"चर गति भक्षणयो:' इस धातु से शनैस' अव्यय उपपद होने से शनैश्चर शब्द सिद्ध हुआ है। 'य: शनैश्चरति स शनैश्चर: " जो सब में सहज से प्राप्त धैर्यवान है, इससे उस परमेश्वर का नाम शनैश्चर है।"

इसमें गति 'शब्द का अर्थ गति प्रापणयो: ' अर्थात गति शब्द द्विअर्थक है गति चलना, और प्राप्त करना। स्वामी जी ने शनैः के साथ चर शब्द का प्रयोग होने से धीरे अर्थात सहज में ही प्राप्त होने वाला होने से ही परमात्मा को 'शनैश्चर' कहते हैं। यह ईश्वर का नाम इस प्रकार ठीक सिद्ध है। विपक्षी का आक्षेप उसके संस्कृत ज्ञान शून्य होने से हुआ है। ईश्वर सहज प्राप्त होने से सर्वान्तर्यामी घट घट वासी कहा जाता है।

प्रश्न १८-स० प्र० पृ० १८ पर लिखा है ' निर्गत आकारात् सनिराकार:' इसका सीधा अर्थ हो होगा जो आकार से निर्गत हो, वह निराकार है। इस से सिद्ध है कि परमात्मा सृष्टि रचना से पूर्व साकार होता है। तभी तो आकार से प्रथक होना सम्भव हो सकता है। निराकार शब्द ही उसके साकारत्व का प्रमाण है।

उत्तर- आपका अर्थ गलत है तथा स्वामी जी की व्याख्या ठीक है। निः=निश्चय पूर्वक, गत=रहित, बिना। निर्गत=प्रथक, आकारात=आकार से। अर्थात क्योंकि परमात्मा निश्चय पूर्वक

आकार से प्रथक वा रहित है अतः वह निराकार है। जिसका कोई आकार न हो वह निराकार होता है। एक देशीय पञ्च भौतिक पदार्थ ही साकार होते हैं। सर्वव्यापक ब्रह्म की सत्ता निराकार ही हो सकती है। अनन्त विश्व में व्याप्त अनन्त ब्रह्म निराकार ही है। कभी साकार व कभी निराकार होने वाली सत्ता होने से परमात्मा विकारी होगा और नाशवान हो जावेगा। परिणमन जड़ प्रकृति का गुण है न कि नित्य निर्विकार ब्रह्म का आपका प्रश्न मिथ्या है। परमात्मा नित्य एकरस अपरिणामी सत्ता है। यदि कोई कहे कि विपक्षी सदाचार से सर्वथा प्रथक है, तो उसका अर्थ यही होगा कि आप पक्के दुराचारी हैं। यह नहीं होगा कि आप कभी सदाचारी भी थे।

प्र०-१९- स०प्र० पृ० १९ में लिखा है कि परमेश्वर का नाम सरस्वती है स्वामी दयानन्द अपने साथ सरस्वती लगाते हैं, तो क्या वे परमेश्वर हैं? गिरि, पुरी, भारती, सरस्वती आदि पौराणिक सम्प्रदायाभिमत नामों का उन्होंने खण्डन किया है। फिर यह कौन सी देवी हैं जिसे कलियुगी सन्यासी प्यार करते हैं।

उत्तर-स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती ने स्वामी जी को जब सन्यास दिया था तो उनका नाम दयानन्द सरस्वती रखा था। यह गुरु का प्रदत्त नाम इनका था। नाम स्वयं नहीं रखे जाते हैं वे गुरु के द्वारा दिये जाते हैं। सरस्वती विद्वान सन्यासी वर्ग की उपाधि है जिसे अनेक पौराणिक मूढ़ साधु अपने नाम के पीछे लगाकर अपने को विद्वान साबित करने का पाखण्ड रचते देखे जाते हैं। सरस्वती शब्द ईश्वर का वाचक है तो इससे आक्षेप कैसे बन गया? पञ्चानन महादेव के अर्थ में आता है तो तुम अपने को पञ्चानन लिख कर सड़ातनियो के खुदा शिव जी क्यों

बने फिरते हो ? दीगरे नसीहत खुदराफ जीहत इसेही तो कहते हैं।

जैसे प्राचीन काल में गौड़पदाचार्य शंकराचार्य आदि विद्वान प्रसिद्ध थे। वैसे ही दयानन्द सरस्वती नाम ऋषिदयानन्द जी महाराज का था। जैसे प्राचार्यों की नकल कर के अविद्वान लोग वे पढ़ लिखे तुम्हारी तरह माधवाचार्य, प्रेमाचार्य वीराचार्य, श्री लण्ठाचार्य आदि बन बैठे हों। उसी तरह तुम्हारे साधू दयानन्द सरस्वती की नकल करने लग पड़े हैं।

पौराणिकों को उपाधियाँ तो गिरि(पहाड़ी), पुरी(पूड़ी कचौड़ी उड़ाने वाले शहरी), भारती (भारत में बिना टिकिट चक्कर काटने, माँगने खाने वाले) आदि ही हैं। ये उनके गुणों व विद्वत्ता की परिचायक नहीं है। स्वामीदयानन्द जी ने'सरस्वती'शब्द का खन्डन सत्यार्थ प्रकाश में कहीं भी नहीं किया है। आप को झूठ बात लिखने में लज्जा आनी चाहिये थी।

आप शायद 'सरस्वती' शब्द से ब्रह्मा की व्यभिचारिणी पुत्री को ग्रहण कर बैठे हैं जिसने ब्रम्हा जी(निज पिता)से दिव्य सहस्त्र वर्ष तक भोग करा के पुत्र को जन्म दिया था और जिससे हर समझदार व्यक्ति घृणा करता है। बलिहारी है आपकी अकल की

प्रश्न २० -- स. प्र. पृ. १६ में लिखा है जो अपना कार्य करने में किसी अन्य की सहायता की इच्छा नहीं करता - उस परमात्मा का नाम सर्व शक्तिमान है। आगे अष्टम समुल्लास में लिखा है 'प्रकृति सृष्टि का उपादान कारण है' अर्थात उसके सहयोग सेही परमात्मा सृष्टि बनाता है, क्या यह परस्पर विरोध भंगभवानी का चमत्कार तो नहीं है ?

उत्तर—विपक्षी नेत्र हीन है अथवा अफीम की पिनक में उसे स० प्र० का पूरा लेख नहीं दिखाई दिया है। वह इस प्रकार है—"सर्वाः शक्तयो विद्यन्ते यस्मिन् स सर्व शक्तिमानीश्वरः" जो अपने

कार्य करने में किसी अन्य को सहायता की इच्छा नहीं करता, अपने ही सामर्थ्य से अपने सब काम पूरे करता है इसलिए उस परमात्मा का नाम "सर्वशक्तिमान" है।

इसका स्पष्ट अर्थ है कि परमेश्वर में अपना कार्य करने की सम्पूर्ण शक्ति विद्यमान है। उसे किसी भी 'शक्ति' की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है। सम्पूर्ण शक्तियां परमेश्वर में विद्यमान है। वहाँ 'शक्ति' शब्द आया है न कि जड़ 'पदार्थ' शब्द है। जड़ प्रकृति का परमात्मा स्वामी है, उसमें व्याप्त है। जड़ प्रकृति जगत का उपादान कारण हैं। उसमें कोई शक्ति नहीं है जो कि परमेश्वर को सहायता दे सके। अतः सत्यार्थप्रकाश के दोनों स्थलों के लेख ठीक हैं। अल्पबुद्धि विपक्षी उसे समझ नहीं पाता है, तो ग्रन्थकर्ता का दोष नहीं है।

प्रश्न २१— स० प्र० पृ० २० में लिखा है कि "सजातीय विजातीय स्वगत भेद शून्य ब्रह्म"। जब तुम प्रकृति और जीव को भी अनादि और अनन्त मानते हो तब वह ईश्वर स्वगत भेद शून्य कैसे होगा? यदि प्रकृति और जीव को ईश्वरानपेक्ष्य सत्ता सम्पन्न मानोगे तो तुम्हारे मत में ये तीनों समान पर तत्व सिद्ध होगे। सर्वपर ईश्वर का अभाव हो जायगा।

उत्तर—मान लो तुम्हारा विवाह हो जावे और तुम्हारी कुल परम्परा के अनुसार नियोग से एक बच्चा तुम्हारा नाम चलाने को पैदा हो जावे। तो वह बच्चा, तुम और तुम्हारे पिता जी यह तीनों ही जीवित होने की दृष्टि से समान हुए किन्तु आयु विद्या, बल, शरीर की स्थूलता तथा भार आदि की द्रष्टि से तीनों में महान अन्तर रहेगा। तुम्हारे पिता जी मुटापा व भारीपन की द्रष्टि से बाजी मारले जावेगे।

इसी प्रकार से ईश्वर-जीव तथा प्रकृति तीनों अनादि

सत में होने से नित्यत्व की द्रष्टि से समान होने से 'सत है। किन्तु जीवात्मा एक देशीय अणुमात्र चैतन्य सत्ता हैं। प्रकृति जड़ नित्य सत्ता है। परमात्मा सत, चित्त तथा आनन्द स्वरूप सर्वाधार सर्वव्यापक सर्वाधिष्ठात्री सत्ता है इस द्रष्टि से तीनों में विभेद है और ब्रह्म का सर्वोपरिपन सुरक्षित रहता है। आशा है समाधान हो गया होगा। प्रश्न सोच समझ कर किया करो। क्या बच्चों के से प्रश्न करते हो ?

प्रश्न २२—स० प्र० पृ० २२ में लिखा है कि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण कर्म स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम भी हैं। उनमें से प्रत्येक गुण कर्म और स्वभाव का एक एक नाम हैं, इससे सिद्ध है कि परमात्मा के सभी नाम सगुण हैं, यहाँ तक कि उसका 'निर्गुण' नाम भी आपाततः गुण रहितता रूप गुण होने का ही सूचक है।

उत्तर– इसमें आपने प्रश्न क्या किया, यह नहीं बताया तो उत्तर किस बात का दिया जावे ?

प्रश्न २३—स० प्र० (द्वितीय समुल्लास) पृ० २५ में लिखा है कि धन्य है वह माता जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करें - क्या गर्भस्थ रज वीर्य के कीटाणुओं को और इन्द्रिय विकल अबोध बालक को उपदेश देना संभव है ? है न भंगड़ की बहक।

उत्तर—यह प्रश्न तुम को प्रेमाचार्य के बजाय पूरा मूर्खाचार्य सावित करता हैं। गर्भाधन के समय के माता पिता के विचारों का, गर्भस्थ शिशु पर माता के बिचारों तथा उसके आहार बिहार आदि का बुरा प्रभाव पड़ता है। सन्तानशास्त्र पढ़कर देखो। तुमतो साक्षात हिजड़े हो। अन्यथा यदि औलाद पैदा की होती तो यह रहस्य भी जान लेते। शिशु पर बातावरण का प्रभाव

पड़ता है, उससे भी वह शिक्षा लेता है। गर्भाधान से लेकर प्रसवोपरान्त बड़े होने तक धीरे २ सदविचारों की शिक्षा बालक को देने की व्यवस्था सर्वथा ठीक है ग्रहस्थलोग इसे जानते हैं, हिजड़े क्या समझे। क्या गर्भावस्था में अभिमन्यु द्वारा चक्रव्यूह तोड़ने की शिक्षा प्राप्त करने की बात भूल गये या उस पर विश्वास नहीं रहा है ?

प्रश्न२४-पृ०२५में लिखा है कि 'एकादशी और त्रयोदशी को छोड़ कर बाकी १० रात्रि में गर्भाधान करना उत्तम है'। यह कौन वेद की आज्ञा है। क्या एकादशी और त्रयोदशी रात्रि में कोई प्रत्यक्ष हानि दिखा सकते हो ? कहिये यहाँ फलित ज्योतिष को मानकर स्वामी जी ने अपने गाल पर तमाचा लगाया या नहीं ?

उत्तर—आँखों के अंधे नाम नैनसुख। बनता है शस्त्रार्थ दशानन शास्त्री और आता नहीं हैं संस्कृत का एक अक्षर भी यह कूढ़ मगज़ गर्भाधान की ग्यारहवी व तेरहवी रात्रिया जिनको संस्कृत में एकादशी व त्रयोदशी रात्रि कहा जाता हैं, अपनी व्रत की पौराणिक रात्रियाँ समझ बैठा हैं और उन पर ज्योतिष खोल बैठा हैं। गर्भाधान के लिये मासिक धर्म के चौथे दिन के बाद किन २ रात्रियों में स्त्री के साथ सयुक्त होने से पुत्र तथा विषम में कन्या होतो है, किन २ रात्रियों में रजोदोश होने से गर्भादान निषिद्ध है। यह आयुर्वेद तथा सन्तानशास्त्र में पढ़ के विपक्षी देख सकेगा। पर उस को इस विज्ञान से क्या मतलब है। उसे तो प्रश्न कर के अपनी मूर्खता दिखानी थी। अब वह समझ सकेगा कि स्वामी जी ने इस जैसे मूर्ख पौराणिक पंडितों के मुंह पर कितना कस के तमाचा लगाया है कि वे उनकी छोटी से छोटी बात को भी समझने में असमर्थ रहते हैं।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पुस्तक ग्रहण क्रमांक 803
... महिला मह...

प्रशन २५ — स० प्र० पृ० २६ में लिखा हैं कि प्रसूता का दूध छः दिन तक बालक को पिलवें, पश्चात धायी पिलाया करे प्रसूता स्त्री दूध न पिलाये। यह किस वेद की आज्ञा हैं ?

प्रश्न २६ —स० प्र० पृष्ठ २६ में लिखा है दूध रोकने के लिये स्तन के छिद्र पर उस औषधि का लेप करें जिससे दूध स्रवित न हो, ऐसा करने से दूसरे महीने पुनरपियुवति ही जाती है। यह किस वेद में लिखा है।

प्रश्न २७—स० प्र० पृ० २६ में लिखा हैं स्त्री योनि का संकोचन और शोधन और पुरुष वीर्य का स्तम्भन करें। यह किस वेद में लिखा है ?

उत्तर—इन तीनो प्रश्नों का हम मुंह तोड़ उत्तर विपक्षी को 'माधवाचार्य को डबल उत्तर' पुस्तक में दे चुके हैं। उत्तर मिल जाने पर भी बार बार वही प्रश्न करते जाना विपक्षी की धूर्तता नहीं तो और क्या है।

प्र० २८— स० प्र० पृ० २७ में लिखा है कि उपस्थेन्द्रिय के स्पर्श और मर्दन से हस्त में दुर्गन्ध भी होता है'। लिंग स्पर्श से हाथ में दुर्गन्ध भी होता है, यह बात स्वामी जी ने वेद के किसी मन्त्रानुसार लिखी है या अपने निजी अनुभव के आधार पर। कहिये कामगंजी जी ! आपकी क्या राय है ?

उत्तर— उपस्थेन्द्रिय के स्पर्श व मर्दन से हाथों में दुर्गन्ध होती है, यह सभी जानते हैं। पर विपक्षी फिर भी हम से उत्तर चाहता है तो उत्तर सुनले। यदि निम्न उत्तर से उसका पूरा समाधान नहीं होगा। तो हम उसे प्रमाण भी बतादेंगे। पहिले वह निम्न प्रकार से परीक्षा कर के देख लें।

(क)विपक्षी ने अपने लोकालोक' अखबार के 'शंका समाधानाङ्क में पृ० ४७ पर पंक्ति २ में हस्त मैथुन करने की विकालत की है।

वह स्वयं भी यह कुकर्म करता ही होगा। तो चाहे जब भी हस्त मैथुन के बाद अपने हाथ को सूंघ कर देखले कि उसमें बदबू आती है या खुशबू।

(ख) मूत्रेन्द्रिय तथा गुदेन्द्रिय दोनो मल निकलने के मार्ग हैं। विपक्षी अपनी गुदा में अंगुली डाल कर फिर उसे नाक में घुसेड़ कर सूँघ कर देखे कि खुशबू आती है या बदबू। वह चाहे तो उसे चख कर स्वाद भी जान सकेगा।

(ग) आगे के प्रश्न २९ में उसने लिखा है कि वह मृतकों की आत्माओं को बुला कर बातें करा सकता हैं। तो दीर्घतमा ऋषि के लिंग को मुंह में देकर चाटने व चूसने वाली सुदेषणा रानी की रूह को बुला कर पूँछ ले कि उसका स्वाद कैसा होता है और उसमें सुगन्धि आती है या बदबू।

(घ सूर्य ने अपनी भतीजी संज्ञादेवी के मुंह में मैथुन कर के तथा 'उसे' नाक में घुसेड़ कर वीर्यधान किया था (यह भविष्य पुराण में लिखा हैं)। तो विपक्षी संज्ञादेवी की रूह को बुला कर उससे पूँछ ले कि उसका स्वाद कैसा था तथा नाक में अन्दर जाने पर उसमें गन्ध कैसी आ रही थी?

(ङ) शिवजी के लिंग को विष्णु आदि देवताओं ने सूँघा, चूसा व वीर्यपान किया था और सभी को गर्भ रह गये थे (सौरपुराण) तो विपक्षी विष्णु जी से पूँछले लिंग में बदबू आरही थी या खुशबू उड़ रही थी। यह भी पूँछ ले कि 'उस' का तथा वीर्य का जायका कैसा लगा था?

(च) आपके व्यासावतार ने लिखा है "निज शुक्रं गृहीत्वा तु वाम हस्तेन यः पुमान्। कामिनी चरणं वामं लिंपेत्स स्यात् स्त्रियः प्रियः।" (गरुड़ पुराण)। तो व्यासजी से पूंछ लेना कि हस्त मैथुन द्वारा निज वीर्य निकाल कर जब उन्होंने इस विलक्षण

नुस्खे का स्वानुभव किया था तो अपने हाथ में उनको खुशबू आ रही थी या बदबू उड़ रही थी।

(छ) शिवजी जब दारुवन में व्यभिचार करने गये थे तो निज लिंग हाथ में पकड़े मसल रहे थे। तथा अत्रि की पत्नी अनुसूया से व्यभिचार करने गये थे तब भी उसे हाथ में पकड़े हुए गये थे। 'हस्ते लिङ्गं विधारयन' (शिव पुराण) तथा "लिङ्गं हस्तः स्वयं रुद्रो विष्णुस्तद्रस वर्धनः" (भविष्य पुराण) के प्रमाण इस में साक्षी हैं। तो विपक्षी शिवजी को बुला कर पूँछ ले कि निज लिंग को पकड़ने व उसका मर्दन करने पर उनके हाथों में खुशबू आ रही थी या बदबू पैदा हुई थी

(ज) हमारी नेक राय है कि हमारा विपक्षी खूबसूरत नौजवान प्रेमाचार्य किसी भी पौराणिक युवा पंडित के उद्वृत लिंग को अपने गुद गुदे कोमल हाथों से मर्दन करके अपने हाथों सूँघ कर स्वय अनुभव करले कि उसके स्पर्श करने से हाथों में दुर्गन्धि आवेगी या सुगन्धि मिलेगी। यदि इस सरल परीक्षण में उसे खुशबू नजर आवे तब वह सत्यार्थ प्रकाश की बात पर ऐतराज करके हमसे पुनः उत्तर ले सकेगा।

हमने यह इस लिये लिखा है कि माधव परिवार में सभी छोकड़े लिंग हीन बिलकुल जनखे ही सदा पैदा होते हैं, यह प्रसिद्ध बात है। उनके उपस्थेन्द्रिय तो होती ही नही है। यदि होती तो ऐसी मूर्खतापूर्ण शंकायें विपक्षी को पेश न करनी पड़तीं। इस कुल में वंश चलाने को नियोग की क्रिया व्यवहार में चालू रखी जाती है. यह बात अनेक दिल्ली वासी जानते हैं। इसलिए ये विचारे यह भी नहीं जानते कि 'वड़' कैसा होता है और उसे छूने से हाथ में बदबू आ तो है या खुशबू।

प्रश्न २६—स०प्र० पृ० २७ म लिखा है। भूत प्रेत आदि

मिथ्या है ... सभी वेदों में खास कर अथर्ववेद में भूत प्रेत योनियों को सिद्ध करने वाले सूक्त के सूक्त भरे पड़े हैं। अथर्ववेद का १२ वाँ काण्ड पढ़कर देख लो। हम भूत बने स्वामी जी की आत्मा को बुला कर बात करा सकते हैं।

उत्तर—भूत प्रेत कोई योनि नहीं हैं। विपक्षी का दावा मिथ्या है। अथर्ववेद में भूत प्रेतों को बताने वाला न कोई मंत्र है और न काण्ड है। विपक्षी चतुर्वेद भाष्यकार श्री पं० जयदेव शर्मा कृत अथर्ववेद भाष्य पढ़कर अपना अज्ञान दूर कर सकता है। स्वामी दयानन्द जी की आत्मा को विपक्षी विचारा क्या बुला सकेगा, गाल बजाना जानता है। यदि वह भूत प्रेतों को बुला सकता है तो हमारे ऊपर के उत्तर न० २८ में वर्णित सुदेषणा रानी, विष्णु, शिव, व्यासादि की रूहों को बुला कर लिंग की बदबू व जायका पूछ कर बतावें। पोल खुल जावेगी। साहस हो तो चुनौती स्वीकार करे। कूर्म पुराणानुसार दारुवन में व्यभिचार करने पर शिवजी पर लात घूसे, डन्डों की भारी मार पड़ी थी, तो शिवजी की रूह को बुला कर पूछना कि उनके चोट कितनी आई थी तथा उनका कटा हुआ लिंग अभी तक किसी ने जोड़ा या नहीं अथवा वह लिंग हीन बना फिरता है ?

प्रश्न ३०— स०प्र० पृ० २७ में लिखा है कि "दाह करने वाला शिष्य (प्रेतहार) अर्थात् मृतक को उठाने वाले के साथ दशवें दिन तक अशुद्ध रहता है।" मरने और जन्मने पर अशौच होता है। क्या दयानन्दी वेद में ऐसा प्रमाण दिखा सकते हैं ? दस दिन तक अशुद्ध रहता है- यह किसी यन्त्र द्वारा प्रत्यक्ष दिखाया जा सकता है क्या ? यदि नहीं तो फिर धर्म के अदृष्ट अनुष्ठानों को तुम और तुम्हारे दादा गुरु 'पोपलीला' किस मुँह से कहा करते हो ?

उत्तर—स०प्र० समुल्लास २ में मनुस्मृति अ० ५ श्लोक ६५ दिया है जिसकी दूसरी पक्ति में प्रेतहारैः सम तत्र दश रात्रेण शुध्यति' का अर्थ स्वामी जी ने दिया है जिस पर आपको आपत्ति है। श्लोक में 'दशरात्रेण' पद है अर्थात् मृतक को उठाने वाला व दाह करने वाला दस रात्रियों में शुद्ध हो पाता है। यह आयुर्वेद का विषय है। विपक्षी इस विषय में खाक भी नहीं समझ सकता है। मुर्दे की देह (शव) से जो दुर्गन्धि निकलती है उसका प्रभाव शव स्पर्श करने वालों के शरीर पर होता है। किसी के शरीर में जख्म हो और शव की वायु का स्पर्श हो जावे तो घाव बिगड़ जाते हैं, यह सभी लोग जानते व प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। इसी प्रकार शव के स्पर्श से दूषित वायु का मुर्दे को उठाने वालों (प्रेत हारैः) के शरीरों पर जो खराब प्रभाव होता है उसको धीरे २ शरीर में से निकलने में दस रात्रियों का समय लग जाता है। जैसे किसी बालक को द्रष्टि दोष का रोग लग जाने पर लाल मिर्च को हाथ में लेकर बालक के मस्तक पर १०। २० बार घुमाने से शरीर के रोगांश को मिर्च आकर्षित कर लेती है तथा मिर्च के प्रभाव को शरीर आकर्षित कर लेता है और अग्नि में मिर्च डालने पर कोई गन्ध नहीं आती है किन्तु रोग दूर होने पर आने लगती है, तथा जैसे मलीन वस्त्र पहिनने पर शरीर मलीनता को आकर्षित करने से अस्वस्थ बन जाता है, स्वक्ष वस्त्र पहिनने पर शरीर स्फूर्ति अनुभव करता है, वैसे ही मृतक की गन्दी वायु के गन्दे तत्वों का जो आकर्षण वायु में से प्रेत स्पर्श करने वालों के शरीर कर लेते हैं यह गन्दगी रात को सोने में शरीर से धीरे२ निकली रहती हैं और दस रात्रियों में लोग पूर्ण स्वस्थ हो पाते हैं। 'मनु महाराज की उक्त वैज्ञानिक बात को ऋषि दयानन्द जी ने ठीक समझ कर उसका प्रमाण दिया

था। पर विद्या में कोरा ढपोल शख विपक्षी इन बातों को क्या समझे। झूठी नकल करके या मोल खरीदी हुई डिग्रियां नाम के सामने लगाने से कोई विद्वान नहीं बन सकता है। पौराणिक पोपलीलायें तो स्पष्ट पाखण्ड हैं जो धर्म के नाम पर आप लोगों में फैला रखी है। आप का सारा मत तथा धन्धा ही पोपडम पर आधारित है।

प्रश्न ३१ स० प्र० पृ० २८ में लिखा है 'शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत है, तो जो चेतन आत्मा पुनर्जन्म से पूर्व रहता है उसका क्या नाम है?

उत्तर—नाम रूप वाले स्थूल शरीर नष्ट हो जाने पर सम्पूर्ण जीवात्माओं को जीवात्मा ही कहते हैं। निराकार जीवात्माओं के कोई नाम नहीं होते हैं न उनकी कोई शक्ल सूरत आकार एव रंग आदि होते हैं।

प्रश्न ३२ स० प्र० पृ० २६ में लिखा है कि 'क्या ये (सूर्यादि ग्रह) चेतन हैं जो क्रोधित हो के दुःख और शान्त हो के सुख देंगे'। — 'शन्नोग्रहाश्चन्द्रमसाः' (अथर्व १६।६।१०) आदि वेद मन्त्रों में ग्रहों को सम्बोधन करके उनसे कल्याण की प्रार्थना की गई है इत्यादि...।

उत्तर— स्वामीजी का लेख ठीक है। सूर्य चन्द्रमा आदि लोक जड़ होने से किसी की प्रार्थना स्तुति नहीं सुन सकते हैं। और न प्रार्थना से किसी को दुःख सुख दे सकते हैं। विपक्षी तो सच मुच अज्ञनता में एम० ए० हो है जो इतनी सी बात भी नहीं समझ पाता है। अथर्ववेद में कोई भी मंत्र जड़ लोकों की उपासना का नहीं है। 'शन्नो ग्रहाश्चन्द्रमसाः' में ईश्वर प्रार्थना है न कि ग्रहों की स्तुति है। मंत्र का अर्थ हैं कि हे परमेश्वर! चन्द्रमा, राहु, धूम्रकेतु आदि भौतिक लोको का जो वैद्युतिक

प्रभाव हमारी पृथ्वी पर पड़ता है वह हम सब के लिये आपकी कृपा से कल्याण दायक हो, वह हानि कारक न हो। सूर्य चन्द्रादि का प्रकाशादि का प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है।

प्रश्न ३३—स०प्र० पृ० २६ में लिखा है कि अंक बीज, रेखा गणित विद्या है वह सब सच्ची जो फल लीला है वह सब झूठी है।" यदि फल लीला झूठी है तो स्वामी जी ने सस्कार विधि में सभी सस्कारों के लिये विशेष महूर्त क्यों लिखे हैं ?- म० कृष्ण प्रताप व वीर अर्जुन पत्रों में दैनिक राशिफल क्यों छापते हैं ? समावर्तन संस्कार में बालक की माता द्वारा जल की भरी अंजलि चन्द्रार्घ देना क्यों लिखा है ?

उत्तर—फल लीला बिलकुल झूठी है, यह सत्य है। संस्कार विधि में संस्कारों के लिये कोई मुहूर्त छांटना नहीं लिखा है। जो समय घर वाले ठीक समझते हैं वही स्वय निश्चित कर लेते हैं और वही उनका मुहूर्त होता है। न कि आपकी ढपोल शंखी पत्रा जी से मुहूर्त या समय छांटा जाता है। समार्वतन संस्कार में माता से चन्द्रार्घ दिलाने की बात नहीं लिखी है। झूठ बोलने व लिखने में आपको शर्म आनी चाहिये। सभी अखबार वाले पंसा कमाने को जो भी जो कुछ छपाता है तगड़ी रकम विज्ञापन शुल्क की लेकर विज्ञापन चाहे किसी का भी छापते हैं। वे जानते है। कि आज के बुद्धिवादी युग में कोई भी इन ढोंगी ज्योतिषियों के जाल में तो फंसेगा नहीं, तब इन से पैसा पैदा करने में क्यों चूका जावे ?

प्रश्न ३४—स०प्र० पृ० ३१ पर लिखा है कि मारण मोहन उच्चाटन वशीकरण आदि करना कहते हैं उनको भी महा पामर समझना।,

अथर्ववेद के अनेक सूक्त उक्त चमत्कारों से भरे पड़े हैं। यह

तथ्य विदेशीय अनुसंधायको ने भी प्रगट किया है। अघः सवीरदेश इत्यादि मंत्र शत्रुमारणार्थक माने हैं। बोलो तुम वेद के पीछे चलना चाहते हो या वेद को अपने पीछे चलाना चाहते हो?

उत्तर—सत्यार्थप्रकाश का लेख सत्य है। अथर्ववेद में मारण मोहन उच्चाटन जैसे विषयों का प्रतिपादक या समर्थक कोई मंत्र नहीं है विदेशीय अंग्रेज लोग तो वेदों को भ्रष्ट करने वाले तुम्हारे पूर्वज सायण महीधरादि के अन्धानुगामी रहे हैं। आप चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार का अथर्ववेद भाष्य तथा निरुक्त पर निरुक्त सम्मर्श स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज का भाष्य पढ़ कर वेद तथा निरुक्त का रहस्यार्थ समझ कर अपना अज्ञान मिटालेवें। हम वेदानुगामी हैं। आपकी तरह बुद्धि पर ताला लगा कर ढोंगी तान्त्रिकों के अन्धानुगामी नहीं हैं।

प्रश्न ३५—स०प्र० पृ० ३१ में लिखा है। कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक रहें।

सत्यार्थप्रकाश का चौथा समुल्लास नियोग जैसे महा गन्दे विषय की कथा से भरा है। रमाबाई जैसी दुराचारिणी स्त्री स्वामी जी के साथ रही। इत्यादि।

उत्तर—विष्टा के कीड़े को सुगन्धि में भी दुर्गन्धि नजर आती है। सत्यार्थप्रकाश का लेख कितना उत्तम है परन्तु इस लण्ठाचार्य को यह भी पसन्द नहीं आ रहा है। नियोग पर आक्षेपों का हम उत्तर तुमको और तुम्हारे पिता जी को "माधवाचार्य को डबल उत्तर" में दे चुके हैं, उस पर तुम सभी की बोलती बन्द हो चुकी है। इसी तरह विदुषी रमा बाई के आक्षेप का उत्तर तुमको हमारे मित्र पं० शिवपूजनसिंह जी कुशवाहा M. A. नीर

क्षीर विवेक मे दे चुके हैं। उस पर भी तुम्हारी बोलती है। तब फिर वही बात बार २ क्यों पेश करते हो? क्या यह तुम्हारी धूर्त मनोवृति का सबूत नहो है। और खरी २ सुनना चाहो तो हम तुम को बताते हैं कि रमाबाई तुम्हारी खास दादी का उप नाम था। अपनी दादी की वदनामी करने में शरमाया करो। अभी तो तुम्हारे अब्बाजान श्री माधवाचार्य जी जिन्दा बैठे हैं। कहीं उनको अपनी माता जी की बदनामी सुन कर जोश आगयो तो बच्चू! इतने वे भाव के सर पर तड़ातड़ पड़ेंगे कि एक भी बाल न बचेगा। मिस्टर! लायक औलाद अपने बाप दादों की इज्जत की धूल सरे बाजार नहीं उड़ाती हैं। कुछ तो शर्म करो। बिल्कुल बेहया ही बन बैठे हो।

प्रश्न ३६— स० प्र० पृ० ३२ में लिखा हैं कि द्विज अपने सन्तानों का उपनयन करके आचार्य कुल में लड़के लड़कियों को भेज दें और शूद्रादि वर्ण उपनयन किये विना विद्या अभ्यास के लिये गुरुकुल में भेज दें।

इससे स्पष्ट है कि द्विज बालकों का ही यज्ञोपवीत होना चाहिये शूद्र बालक का नहीं! तथा द्विजो के बालक आचार्य कुलों में प्रविष्ट हों और शूद्र बालक गुरुकुल में। दयानन्दी बताये कि वे सभी को यज्ञोपवीत किस प्रमाण से देते हैं? ... तुम द्विज बालकों को गुरुकुल में क्यों भेजते हो? वह तो केवल शूद्रो के बालकों की शिक्षा सस्था है?

उत्तर—आर्य समाज शूद्रों को यज्ञोपवीत नहीं देता है। आपका आक्षेप व्यर्थ है। किन्तु पौराणिक मत सनातन धर्म शूद्रों को यज्ञोपवीत का अधिकारी मानता है। देखो प्रमाण—

कुश सूत्रं द्विजानां स्याद्राज्ञां कौशेय पट्टकम् ॥ ९ ॥
वैश्यानाँ चीरणं क्षौमं शूद्राणां शणवल्कजम्।

कार्पा संपद्मजं चैव सर्वेषां शस्त मीश्वर ।। १० ।।

ब्राह्मण्यांकर्त्तितं सूत्र त्रिगुणं त्रिगुणो कृतम् ।

(गरुड़ पु०आ० कां ४३)

अर्थात्—ब्राह्मणों का कुश का, क्षत्रियों का रेशम का, वैश्यों का सूत का और शूद्रों का सन का यज्ञोपवीत होना चाहिए। हे राजन्! अथवा सभी के लिये सूत का उचित है। जो ब्राह्मणी के हाथ का कता हुआ तीनबार तिहरा किया हुआ हो।

इससे सिद्ध है कि आप लोग स्वयं तो शूद्रों को जनेऊ देते हो और उल्टे आक्षेप हम पर करते हो। काम व्रत के बहाने रंडियों के मुंह से मुंह व नाक से नाक मिला कर उनका माल हजम कर जाते हो और भडुओं को जनेऊ देते हो तो शूद्रों से नफरत तुम्हें क्यों है? राज्य व्यवस्था वैदिक न होने से प्रथक २ आचार्य कुल व गुरुकुल इस लिए नहीं चलाये जा सकते हैं कि अर्थ का प्रश्न सामने है, साथ ही शूद्र स्थिति के लोग निज बालकों को आश्रम प्रणाली से शिक्षा दिलाने को तय्यार नहीं हैं, क्योंकि उन पर राज्य का दवाव नहीं है। वैसे आचार्य तथा गुरु दोनों शब्द समानार्थक है, कोई भेद नहीं है। नामभेद तो प्रथक २ संस्थाय खोलने के लिये है। पर आपको आक्षेप भारत सरकार से करना चाहिये जो कि स्कूल कालेजों में सभी वर्ग व मत के लड़कों व लड़कियों को साथ २ पढ़ा रही हैं। वहां जाकर आप शिक्षा मन्त्रालय पर क्यों नहीं रोते और हत्या देते हैं?

प्रश्न ३७—स०प्र० पृ० ३३ में लिखा है कि 'माता पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य का उपदेश करें' (क) सत्यार्थप्रकाश में लिखा है, हिरण्याक्ष पृथ्वी को चटाई के समान लपेट कर सिरहाने रख कर सो गया। (ख) हिरण्यकश्यपु द्वारा प्रह्लाद को अग्नि में तपे लोहे के खम्बे पर चिपटने का

आदेश देना उस पर चीटियां चलाना आदि भागवत में नहीं लिखा हैं जैसाकि लिखा गया है। हमने सवा सौ झूठों का संग्रह किया है ··· इत्यादि।

उत्तर—सत्य का उपदेश देना तुमको बुरा लगता हो तो तुम झूठ का उपदेश दिया करो। (क) सत्यार्थप्रकाश में जो पृथ्वी को लपेटने व खम्बे पर चीटी चलने की बातें लिखी हैं वह वास्तव में भागवत आदि पुराणों की ही है। पर आप लोगों ने भागवत मैं से हमारे डर के मारे अब जान बूझ कर निकाल डाली है। प्रमाण यह है कि भागवत स्क० १२ अ० ३३ श्लोक ६७ में लिखा है कि भागवत में १८००० श्लोक हैं। जब कि अब कटे छटे आपके भागवत में १४१८० श्लोक ही केवल हैं। अर्थात् ३८२० श्लोक जिनमें ऐसी ही गप्पे भरी थी आप लोगों ने उस में से निकाल डाले हैं। सत्यार्थप्रकाशोक्त उक्त दोनों कथाये १८००० श्लोक वाले भागवत में थी। आप पूरा भागवत पेश करें हम दोनों उपरोक्त गप्प कथायें उसमें दावे के साथ दिखा देंगे। सत्यार्थप्रकाश का लेख सवथा सत्य हे। फिर भी नवलकिशोर प्रेस लखनऊ के सन् १८७० के छपे भागवत में खम्बे पर चीटी चलने तथा गरुड़ पुराण उत्तर ख० अ २६।३ में चटाई के समान पृथ्वी को हिरण्याक्ष के लपेटने की कथा आज भी विद्यमान देखी जा सकती है। यह दोनो कथायें आपके भागवत में भी ऋषि दयानन्द के काल में विद्यमान थी।- अप स्वयं महा गप्पी तथा झूठों के सरदार महा झूठे हैं। आपके पास झूठ और गप्पो का भंडार न होगा तो और किस पर होगा।

प्रश्न३८—स०प्र०पृ०३४ में लिखा है कि मांस आदि के सेवन से अलग रहो' परन्तु दयानन्दी (यजुर्वेद भष्य ३४/१७) में लिखा कि बहु पशु का हवन करे और हुत शेष का भोक्ता बनें इन

परस्पर विरुद्ध उक्तियों का क्या समाधान है? ······ कासगंजी उत्तर दें।

उत्तर—मांस भक्षण पौराणिक पाप है वैदिक धर्म नहीं। अतः उससे बचने का उपदेश ठीक है। विष्णु पुराण अ० ३ अ० १६ में गाय काट कर श्राद्ध करने का विधान आपके यहां वर्तमान ही हैं। पर आप को झूट बोलने में शर्म क्यों नहीं आती है, हमें आश्चर्य है। स्वामी दयानन्द जी के यजुर्वेद भाष्य के अध्याय ३४ के मंत्र १७ में कहीं भी बहु पशु को हवन करें और हुत शेष का भोक्ता बनें' यह शब्द नहीं है। यदि यजु० ३४।१७ में यह लिखा दिखा दें तो १०१) इनाम नगद प्राप्त करें। वरना आप महा झूठे सिद्ध हैं।

आप ने हमसे अपने ३८ प्रश्नों का उत्तर मांगा था जो दिया गया है। क्या आप में दम है कि आप या आपके भारत के सारे सनातनी पौराणिक पंडित मिल कर भी हमारी दो किस्तों के प्रश्नों का जबाब दे सकते हैं जोकि लग भग ७ वर्ष से भारत के पौराणिकों की खोपडी पर सवार हैं और जिनको पढ़ कर उन्हें नींद भी नहीं आती हैं? अगर सही उत्तर उनके दे सकोगे तो १०१) इनाम मिलेंगे। किस्मत आजमाइये।

भविष्य में प्रश्न सभ्यता पूर्वक तथा पाण्डित्यपूर्ण करना सीख लो तो अच्छा होगा वरना हम उत्तर में तुम्हारे इस सड़ातन धर्म की धज्जियां उड़ा कर रख देंगे? नोट करलो।

गुरु विरजानन्द दण्डी सन्दर्भ पुस्तकालय
प्र. परिग्रहण क्रमांक 802 (2)
... महिला मं...

मुद्रकः— आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, नदरई गेट कासगंज।

आचार्य डा० श्रीराम आर्य - कृत

"खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला" की क्रान्तिकारी पुस्तकों की सूची-

ईश्वर सिद्धि (त्रैतवाद, उपासना, मोक्ष आदि विषय)		२.००	नयेपैसे
कुरान दर्पण	(खण्डन)	२.००	,,
श्रीमद्भागवत समीक्षा	(भागवत खण्डन)	३.००	,,
गीता विवेचन	(गीता खण्डन)	२.७५	,,
अवतार रहस्य	(अवतारवाद खण्डन)	१.५०	,,
मुनि समाज मुख मर्दन	(खण्डन)	१.५०	,,
शिवलिंग पूजा क्यों ? (मूत्रेन्द्रिय पूजा का भन्डाफोड़)		१.१२	,,
पुराण किसने बनाये ?		.७५	,,
माधवाचार्य को डबल उत्तर		.६५	,,
कबीर मत गर्व मर्दन		.६०	,,
पौराणिक गप्पदीपिका		[illegible]	,,
शिवजी के चार विलक्षण बेटे		[illegible]	,,
सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़ का उत्तर		.४०	,,
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है।		.५०	,,
पुराणों के कृष्ण		.३१	,,
मृतक श्राद्ध खण्डन		.३१	,,
शास्त्रार्थ के सनातनी चैलेञ्ज का उत्तर		.२५	,,
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है		.२५	,,
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था		.२५	,,
पौराणिक मुख चपेटिका		.१६	,,
नृसिंह अवतार वध		.१२	,,
संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न		.१२	,,
अवतार वाद पर ३१ प्रश्न		.१०	,,
हिन्दू संगठन का मूल मंत्र		.०६	,,

नोट-कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। सूचीपत्र मंगावे।

व्यवस्थापक-

"वैदिक साहित्य प्रकाशन"-कासगंज (उ०प्र०) भारतवर्ष

देवराज शोध पुस्तकालय
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)
क्रम सं० ....